कुबेर की शिवभक्ति

प्राचीन काल में काम्पिल्य नगर में यज्ञदत्त नामक एक परम तपस्वी एवं सदाचारी ब्राह्मण रहते थे। उनके 'गुणनिधि' नामक एक पुत्र हुआ। दैववश कुसंग में पड़ने से उसे जुआ खेलने का दुर्व्यसन तथा अन्य प्रकार के दुराचारों में प्रवृत्ति हो गयी। नित्य वह अपने पिता से छिपाकर घर के आभूषण आदि चुरा ले जाता और जुआ में हार जाता। जब यज्ञदत्त को उसके दुर्व्यसन का पता लगा तो उन्होंने उसे अपने घर से निकाल दिया। घर से निकलकर गुणनिधि भोजन की खोज में संध्या-समय एक शिवालय में पहुँचा, उस दिन शिवरात्रि थी। वह वहाँ द्वार पर बैठकर शिवकीर्तन सुनने लगा। रात को जब सब लोग सो गये तो शिवभोग चुराने के लिये वह मन्दिर में घुसा। उस समय दीपक की ज्योति क्षीण हो गयी थी। इसलिये उसने अपना कपड़ा फाड़कर बत्ती जलायी और भोग चुराकर भागने लगा। इतने में उसके पैर के लग जाने से एक आदमी जाग पड़ा। गुणनिधि भागा ही जा रहा था पर वह पकड़ा गया तथा उसे रक्षकों की मार से अपना प्राण गवाँ देना पड़ा।

अपने कुकर्मों के कारण वह यमदूतों द्वारा बाँधा गया। इतने में ही भगवान् शंकर के पार्षद वहाँ आ पहुँचे और उन्होंने उसे उनके बन्धन से छुड़ा दिया। शिवगणों के सङ्ग से उसका हृदय शुद्ध हो गया था। अत: वह उन्हीं के साथ तत्काल शिवलोक में चला गया। वहाँ सारे दिव्य भोगों का उपभोग तथा उमा-महेश्वर का सेवन करके कालान्तर में वह कलिङ्गराज अरिंदम का पुत्र हुआ। वहाँ उसका नाम था दम। वह निरन्तर भगवान् शिव की सेवा में लगा रहता था। बालक होने पर भी वह दूसरे बालकों के साथ शिव का भजन किया करता था। वह क्रमश: युवावस्था को प्राप्त हुआ और पिता के परलोकगमन के पश्चात् राजसिंहासन पर बैठा।

राजा दम बड़ी प्रसन्नता के साथ सब ओर शिवधर्मों का प्रचार करने लगे। भूपाल दम का दमन करना दूसरों के लिये सर्वथा कठिन था। समस्त शिवालयों में दीपदान करने के अतिरिक्त वे दूसरे किसी धर्म को नहीं जानते थे। उन्होंने अपने राज्य में रहनेवाले समस्त ग्रामाध्यक्षों को बुलाकर यह आज्ञा दे दी कि 'शिवमन्दिर में दीपदान करना सबके लिये अनिवार्य होगा। जिस-जिस ग्रामाध्यक्ष के गाँव के पास जितने शिवालय हों, वहाँ-वहाँ बिना कोई विचार किये सदा दीप जलाना चाहिये।' आजीवन इसी धर्म का पालन करने के कारण राजा दम ने बहुत बड़ी धर्मसम्पत्ति का संचय कर लिया। फिर वे काल-धर्म के अधीन हो गये। दीपदान की वासना से युक्त होने के कारण उन्होंने शिवालयों में बहुत से दीप जलवाये और उसके फलस्वरूप जन्मान्तर में वे रत्नमय दीपों की प्रभा के आश्रय हो अलकापुरी के स्वामी हुए। इस प्रकार भगवान् शिव के लिये किया हुआ थोड़ा-सा भी पूजन या आराधन समयानुसार महान् फल देता है, ऐसा जानकर उत्तम सुख की इच्छा रखनेवाले लोगों को शिव का भजन अवश्य करना चाहिये। वह यज्ञदत्त का पुत्र, जो सदा सब प्रकार के अधर्मों में ही रचा-पचा रहता था, दैवयोग से शिवालय में धन चुराने के लिये गया और उसने स्वार्थवश अपने कपड़े को दीपक

की बत्ती बनाकर उसके प्रकाश से शिवलिङ्ग के ऊपर का अँधेरा दूर कर दिया; इस सत्कर्म के फलस्वरूप वह कलिङ्ग देश का राजा हुआ और धर्म में उसका अनुराग हो गया। फिर दीप की वासना का उदय होने से शिवालयों में दीप जलवाकर उसने दिक्पाल का पद पा लिया।

पहले के पाद्मकल्प की बात है, ब्रह्मा के मानस पुत्र पुलस्त्य से विश्रवाका जन्म हुआ और विश्रवा के पुत्र वैश्रवण (कुबेर) हुए। उन्होंने पूर्वकाल में अत्यन्त उग्र तपस्या के द्वारा त्रिनेत्रधारी महादेव की आराधना करके विश्वकर्मा की बनायी हुई आलकापुरी का उपभोग किया। जब वह कल्प व्यतीत हो गया और मेघवाहन कल्प आरम्भ हुआ, उस समय वह यज्ञदत्त का पुत्र, जो प्रकाश का दान करनेवाला था, कुबेर के रूप में अत्यन्त दुस्सह तपस्या करने लगा। दीपदान मात्र से मिलनेवाली शिवभक्ति के प्रभाव को जानकर वह शिव की चित्प्रकाशिका काशिकापुरी में गया और अपने चित्तरूपी रत्नमय प्रदीपों से ग्यारह रुद्रों को उद्‌बोधित करके अनन्यभक्ति एवं स्नेह से सम्पन्न हो वह तन्मयतापूर्वक शिव के ध्यान में मग्न हो निश्चलभाव से बैठ गया। जो शिव की एकता का महान् पात्र है, तपरूपी अग्नि से बढ़ा हुआ है, काम-क्रोधादि महाविघ्नरूपी पतङ्गों के आघात से शून्य है, प्राणनिरोधरूपी वायुशून्य स्थान में निश्चलभाव से प्रकाशित है, निर्मल दृष्टि के कारण स्वरूप से भी निर्मल है तथा सद्‌भावरूपी पुष्पों से जिसकी पूजा की गयी है, ऐसे शिवलिंग की प्रतिष्ठा करके वह तबतक तपस्या में लगा रहा, जबतक उसके शरीर में केवल अस्थि और चर्ममात्र ही अवशिष्ट नहीं रह गये। इस प्रकार उसने दस हजार वर्षोंतक तपस्या की। तदनन्तर विशालाक्षी पार्वती देवी के साथ भगवान् विश्वनाथ कुबेर के पास आये। उन्होंने प्रसन्नचित्त से अलकापति की ओर देखा। वे शिवलिङ्ग में मन को एकाग्र करके ठूँठे काठ की भाँति स्थिरभाव से बैठे थे। भगवान् शिव ने उनसे कहा-'अलकापते! मैं वर देने के लिये उद्यत हूँ। तुम अपना मनोरथ बताओ।'

यह वाणी सुनकर तपस्या के धनी कुबेर ने ज्यों ही आँखें खोलकर देखा, त्यों ही उमावल्लभ भगवान् श्रीकण्ठ सामने खड़े दिखायी दिये। वे उदयकाल के सहस्रों सूर्यों से भी अधिक तेजस्वी थे और उनके मस्तक पर चन्द्रमा अपनी चाँदनी बिखेर रहे थे। भगवान् शंकर के तेज से उनकी आँखें चौंधिया गयीं। उनका तेज प्रतिहत हो गया और वे नेत्र बंद करके मनोरथ से भी परे विराजमान देवदेवेश्वर शिव से बोले-'नाथ! मेरे नेत्रों को वह दृष्टिशक्ति दीजिये, जिससे आपके चरणारविन्दों का दर्शन हो सके। स्वामिन्! आपका प्रत्यक्ष दर्शन हो, यही मेरे लिये सबसे बड़ा वर है। ईश! दूसरे किसी वर से मेरा क्या प्रयोजन है। चन्द्रशेखर! आपको नमस्कार है।'

कुबेर की यह बात सुनकर देवाधिदेव उमापति ने अपनी हथेली से उनका स्पर्श करके उन्हें देखने की शक्ति प्रदान की। दृष्टिशक्ति मिल जाने पर यज्ञदत्त के उस पुत्र ने आँखें फाड़-फाड़कर पहले उमा की ओर ही देखना आरम्भ किया। वह मन-ही-मन सोचने लगा, 'भगवान् शंकर के समीप यह सर्वाङ्गसुन्दरी कौन है? इसने कौन सा ऐसा तप किया है, जो मेरी भी तपस्या से बढ़ गया

है। यह रूप, यह प्रेम, यह सौभाग्य और यह असीम शोभा–सभी अद्‌भुत है।' वह ब्राह्मणकुमार बार–बार यही कहने लगा। जब बार–बार यही कहता हुआ वह क्रूर दृष्टि से उनकी ओर देखने लगा, तब वामा के अवलोकन से उसकी बायीं आँख फूट गयी। तदनन्तर देवी पार्वती ने महादेवजी से कहा–'प्रभो! यह दुष्ट तपस्वी बार–बार मेरी ओर देखकर क्या बक रहा है? आप मेरी तपस्या के तेज को प्रकट कीजिये।' देवी की यह बात सुनकर भगवान् शिव ने हँसते हुए उनसे कहा–'उमे! यह तुम्हारा पुत्र है। यह तुम्हें क्रूर दृष्टि से नहीं देखता, अपितु तुम्हारी तपःसम्पत्ति का वर्णन कर रहा है।' देवी से ऐसा कहकर भगवान् शिव पुनः उस ब्राह्मणकुमार से बोले–'वत्स! मैं तुम्हारी तपस्या से संतुष्ट होकर तुम्हें वर देता हूँ। तुम निधियों के स्वामी और गुह्यकों के राजा हो जाओ। सुव्रत! यक्षों, किन्नरों और राजाओं के भी राजा होकर पुण्यजनों के पालक और सबके लिये धन के दाता बनो। मेरे साथ तुम्हारी सदा मैत्री बनी रहेगी और मैं नित्य तुम्हारे निकट निवास करूँगा। मित्र! तुम्हारी प्रीति बढ़ाने के लिये मैं अलका के पास ही रहूँगा। आओ, इन उमादेवी के चरणों में साष्टाङ्गः प्रणाम करो; क्योंकि ये तुम्हारी माता हैं। महाभक्त यज्ञदत्त–कुमार! तुम अत्यन्त प्रसन्नचित्त से इनके चरणों में गिर जाओ।'

इस प्रकार वर देकर भगवान् शिव ने पार्वती देवी से फिर कहा–'देवेश्वरी! इसपर कृपा करो। तपस्विनि! यह तुम्हारा पुत्र है।' भगवान् शंकर का यह कथन सुनकर जगदम्बा पार्वती ने प्रसन्नचित्त हो यज्ञदत्तकुमार से कहा–'वत्स! भगवान् शिव में तुम्हारी सदा निर्मल भक्ति बनी रहे। तुम्हारी बायीं आँख तो फूट ही गयी। इसलिये एक ही पिङ्गलनेत्र से युक्त रहो। महादेवजी ने जो वर दिये हैं, वे सब उसी रूप में तुम्हें सुलभ हों। बेटा! मेरे रूप के प्रति ईर्ष्या करने के कारण तुम कुबेर नाम से प्रसिद्ध होओगे।' इस प्रकार कुबेर को वर देकर भगवान् महेश्वर पार्वती देवी के साथ अपने धाम में चले गये। इस तरह कुबेर ने भगवान् शंकर की मैत्री प्राप्त की और अलकापुरी के पास जो कैलास पर्वत है, वह भगवान् शंकर का निवास हो गया।

कुबेर की शिवभक्ति संबंधी कई कथाएँ थोड़े–थोड़े अन्तर के साथ अनेक पुराणों में पायी जाती हैं। उदाहरण के लिये हम यहाँ ब्रह्मपुराण एवं स्कंदपुराण में वर्णित कथा का संक्षेप प्रस्तुत करेंगे। ब्रह्मपुराण की कथा इस प्रकार है।

विश्रवा मुनि के ज्येष्ठ पुत्र कुबेर, जो ऋद्धि–सिद्धि सम्पन्न और उत्तर दिशा के स्वामी हैं, पहले लङ्का के राजा थे। उनके सौतेले भाई रावण, कुम्भकर्ण और विभीषण बड़े बलवान् थे। यद्यपि वे भी विश्रवा के ही पुत्र थे, तथापि राक्षसपुत्री कैकसी के गर्भ से उत्पन्न होने के कारण राक्षस कहलाते थे। वे तीनों भाई तपस्या करने के लिये वन में गये। वहाँ उन लोगों ने बड़ी भारी तपस्या की और ब्रह्माजी से वरदान प्राप्त किया। तदनन्तर अपने मामा मारीच के तथा नाना और माता के कहने से रावण ने कुबेर से लङ्का की राजधानी अपने लिये माँगी। इस बात को लेकर दोनों भाइयों में भारी

शत्रुता हो गयी। फिर तो देवताओं और दानवों में भयंकर युद्ध हुआ। रावण ने अपने बड़े भाई कुबेर को युद्ध में हराकर पुष्पक विमान और लङ्कापुरी पर अधिकार जमा लिया और तीनों लोकों में घोषणा करा दी कि जो मेरे भाई को आश्रय देगा, वह मेरे हाथ से मारा जायगा। कुबेर को कहीं आश्रय न मिला। तब वे अपने पितामह पुलस्त्य के पास गये और उन्हें प्रणाम करके बोले–'मेरे दुष्ट भ्राता ने मुझे लङ्का से निकाल दिया। बताइये, अब क्या करूँ? अब मेरे लिये दैव अथवा तीर्थ ही आश्रय या शरण हैं।' पौत्र की यह बात सुनकर पुलस्त्य ने कहा–'बेटा! तुम गौतमी गङ्गा में जाकर भगवान् शंकर की स्तुति करो। वहाँ गङ्गा के जल में रावण का प्रवेश नहीं हो सकता। अत: मेरे साथ वहीं चलकर कल्याणमयी सिद्धि प्राप्त करो।'

कुबेर ने 'बहुत अच्छा' कहकर उनकी आज्ञा स्वीकार की और पत्नी, पिता, माता तथा वृद्ध महर्षि पुलस्त्य के साथ गौतमी गङ्गा के तट पर गये। वहाँ गङ्गा में स्नान करके पवित्र हो कुबेर भोग–मोक्ष के दाता देवदेवेश्वर भगवान् शिव की स्तुति करने लगे–"शम्भो! आप ही इस चराचर जगत् के स्वामी हैं, दूसरा कोई नहीं। जो लोग आपकी भी अवहेलना करके मोहवश धृष्टता करते हैं, वे शोक के ही योग्य हैं। आप अपनी आठ मूर्तियों द्वारा सम्पूर्ण जगत् का भरण–पोषण करते हैं। आपकी आज्ञा से ही सब लोग चेष्टा करते हैं, तथापि विद्वान् पुरुष ही आपकी महिमा को कुछ–कुछ जान पाते हैं। अज्ञानी पुरुष आप पुरातन प्रभुको कभी नहीं जान सकता। एक दिन जगदम्बा पार्वती ने अपने शरीर के मैल से एक पुतला बनाकर रख दिया और परिहास में आपसे कहा–'देव! यह आपका शूरवीर पुत्र है।' उस पर आपकी कृपादृष्टि हुई और वह विघ्नों का राजा गणेश बन गया। अहो, महेश्वर की दृष्टि का कितना अद्भुत प्रभाव है। जब कामदेव भस्म हो गया और रति उसके लिये विलाप करने लगी, तब दयामयी माता पार्वती ने आँसू बहाते हुए आपकी ओर देखकर कहा–'भगवन्! इन बेचारों का दाम्पत्य–सुख छिन गया।' तब आपने उस पर भी कृपा की। कामदेव मनोभव हो गया–वह रति की मनोभूमि में प्रकट हो गया। इस प्रकार उमासहित महादेवजी की कृपा से रति ने पूर्ण सौभाग्य प्राप्त किया।"

इस प्रकार स्तुति करने पर भगवान् शंकर कुबेर के सामने प्रकट हुए। उन्होंने वर माँगने के लिये कहा, किंतु हर्षातिरेक के कारण कुबेर के मुख से कोई बात नहीं निकली। इसी समय आकाशवाणी हुई। उसने मानो पुलस्त्य, विश्रवा और कुबेर के हार्दिक अभिप्राय को जानकर यह कल्याणमय वचन कहा–'भगवन्! ये लोग धन का प्रभुत्व प्राप्त करना चाहते हैं। इनके लिये भविष्य भूत–सा बन जाय। जिस वस्तु को ये किसी के लिये देना चाहें, वह दी हुई के समान हो जाय तथा जो वस्तु ये स्वयं प्राप्त करना चाहें, वह पहले ही इनके सामने प्रस्तुत हो जाय। ये भगवान् शंकर की आराधना करके इस बात की अभिलाषा रखते हैं कि हमारे शत्रु परास्त हों, दु:ख दूर हो जाय, दिक्पाल का पद प्राप्त हो, धन का प्रभुत्व मिले, अपरिमित दान–शक्ति हो। साथ ही स्त्री और पुत्र का सुख

भी बना रहे।'

कुबेर ने वह आकाशवाणी सुनकर त्रिशूलधारी भगवान् शंकर से कहा–'देव! ऐसा ही हो।' 'तथास्तु' कहकर शिव ने उस दैवी वाणी का अनुमोदन किया। इस प्रकार पुलस्त्य, विश्रवा और कुबेर का वरदान से अभिनन्दन करके भगवान् शिव अन्तर्धान हो गये।

स्कंदपुराण में वर्णित कथा का रूप इस प्रकार है–

शास्त्रज्ञान और शील से सम्पन्न धर्मात्मा कुबेर ने न्यङ्कुमती के पूर्व–तट पर एक शिवलिङ्ग स्थापित किया, जो कुबेरेश्वर के नाम से विख्यात है। वहाँ से पश्चिम न्यङ्कुमती के तट पर जो सोमनाथ महादेव हैं, उनकी पूजा करके कुबेरजी ने उनका इस प्रकार स्तवन किया–'जो यज्ञ का मूल, तुम्बी के ऊँचे फल के समान आकृतिवाली तथा सौ कोटि ब्रह्माण्डों में स्थित है, ब्रह्माण्डवर्ती देवसमूह भी जिसका परिमाण नहीं जानते, महेश्वर की वह महामहिम लिङ्गमूर्ति सदा हमारी रक्षा करे। जो अजन्मा, पुराण तथा उपेन्द्र (विष्णु) के भी वन्दनीय तथा बड़े–बड़े राजाओं से सेवित हैं, चन्द्रमा, सूर्य और अग्नि के समान जिनके नेत्र हैं, जो अपनी ध्वजा में वृषभेन्द्र, नन्दी का चिन्ह धारण करनेवाले तथा प्रलय आदि के हेतु हैं, उन महादेवजी को मैं प्रणाम करता हूँ। जो सबके एकमात्र ईश्वर, देवताओं के एक ही बन्धु, योग से प्राप्त होनेवाले, सम्पूर्ण विश्व के निवासस्थान, विस्मय के आधार, अनन्त शक्तिसम्पन्न, ज्ञानजनक तथा धैर्य आदि गुणों के कारण सर्वोत्कृष्ट हैं अथवा जिनमें धैर्य आदि गुणों की अधिकता है, उन भगवान् शिव को मैं नमस्कार करता हूँ। जिनके हाथों में पिनाक, पाश, अङ्कुश और त्रिशूल शोभा पाते हैं, जो मस्तक पर जटाजूट धारण करते हैं, जिनके शब्दोच्चारण की ध्वनि मेघ के समान गम्भीर है, जिनके सम्पूर्ण अङ्गों की कान्ति स्फटिक मणि के समान उज्ज्वल तथा कण्ठ में नीला चिन्ह है, जो सहस्त्रों मूर्ति धारण करनेवाले विशिष्ट पुरुष हैं, उन भगवान् शिव को मैं प्रणाम करता हूँ। जिन्हें संत पुरुष अक्षर, निर्गुण, अप्रमेय, ज्योतिर्मय, एक, दूरङ्गम (दूर गमन करनेवाले), जानने योग्य, अनिन्द्य, सबके हृदय में अन्तर्यामीरूप से विराजमान तथा परम पवित्र बतलाते हैं, उन भगवान् शङ्कर को मैं नमस्कार करता हूँ। जिनका स्वरूप तेज–पुञ्ज के समान है, जिनके मस्तक पर बालचन्द्रमा शोभा पाते हैं, जिनका भयानक मुख स्फुरित होता रहता है, जो काल के भी काल, मनोवाञ्छित फलों के दाता, आसक्तिरहित, धर्मासन पर स्थित तथा परा और अपरा दोनों प्राकृतियों में विराजमान हैं, उन भगवान् रुद्रदेव को मैं प्रणाम करता हूँ। जो इन्द्रियातीत, विश्वपालक, शत्रुविजयी, तीनों गुणों से परे, अजन्मा, निरीह, तपोमय, वेदमय, प्रजापालक तथा अनेक नामोंवाले इन्द्ररूप हैं, उन्हीं आप महेश्वर को मैं नमस्कार करता हूँ। जो भूत और भविष्य के ज्ञाता महेश्वर हैं, योगवेत्ता मुनीश्वर सदा जिनका ध्यान करते रहते हैं, जो संसारबन्धन के काटनेवाले तथा नित्य मुक्तस्वरूप हैं, उन महादेवजी को मैं बारम्बार नमस्कार करता हूँ। जिन परम पुरुष परमात्मा के अनुपम मुख, बल, प्रभाव और स्वभाव आदि का ज्ञान देवताओं को भी नहीं होता, उन अचिन्तनीय महिमावाले भगवान्

वामदेव को मैं प्रणाम करता हूँ। जिन उग्रमूर्ति भगवान् शिव की आराधना करके अगस्त्यजी ने समुद्र को पी लिया तथा राजा दिलीप ने सम्पूर्ण मनोरथ प्राप्त कर लिये, उन विश्वयोनि भगवान् शङ्कर की मैं शरण लेता हूँ। देवेन्द्रवन्द्य शम्भो! मुझ अनाथ का उद्धार कीजिये। आप कृपालु एवं करुणामय हैं। उमेश! दुःखसागर में डूबे हुए मुझ दीन का उद्धार कीजिये। भव! आप सबका कल्याण करनेवाले हैं। मेरा भी कल्याण कीजिये। जिनकी पूजा करके ब्रह्मा और इन्द्र आदि देवता स्वर्ग में इच्छानुसार विहार करते हैं, उन वन्दनीय शिव की शरण में आकर मैं उन्हीं की स्तुति, उन्हीं का गुणगान, उन्हीं के नाम का जप और उन्हीं की वन्दना करता हूँ।'

इस प्रकार स्तुति करके जब कुबेरजी चुप हुए, तब भगवान् शिव ने उन्हें अपने मित्र का पद, दिक्पालका पद और देवताओं के धनाध्यक्ष का पद-ये तीन वर प्रदान किये और कहा-'यह स्थान तुम्हारे ही नाम पर कुबेरनगर कहलायेगा। तुमने इस स्थान से पश्चिम में जो शिवलिङ्ग स्थापित किया है, उसका जो पुरुष श्रीपञ्चमी के दिन विधिपूर्वक पूजन करेगा, उसके यहाँ सात पीढ़ियोंतक लक्ष्मी बराबर बनी रहेगी।'

(कुबेर की शिवभक्ति-संबंधी उपर्युक्त कथाएँ गीताप्रेस, गोरखपुर द्वारा प्रकाशित संक्षिप्त शिवपुराण की रुद्रसंहिता, सृष्टिखण्ड, के अध्याय-19, संक्षिप्त मार्कण्डेय-ब्रह्मपुराणांक के पृ. 406-407 तथा संक्षिप्त स्कंदपुराणांक के पृ. 1030-1031 से ली गयी हैं।)

❀❀❀❀❀❀

शिवजी पार्वती से कहते हैं कि ब्रह्म का स्वभाव सर्वत्र समान है। जिसके भीतर उस निर्गुण और निर्मल ब्रह्म का ज्ञान है, वही वास्तव में ब्राह्मण है, ऐसा मेरा विचार है।

ब्राह्मः स्वभावः सुश्रोणि समः सर्वत्र मे मतिः।
निर्गुणं निर्मलं ब्रह्म यत्र तिष्ठति स द्विजः॥

(महाभारत, अनुशासनपर्व 143/52)